बुद्धि कहती है कहाँ भी जाए सर्विस करने से बाप का परिचय कि बाप यह नॉलेज देते हैं। तुमको भी अपना टाइम ..... चाहिए। ऐसा न हो जो पछताना पड़े। ऐसे ज़ोर से समझाना चाहिए। इसमें याद का बल हो, वह नशा हो तो तीर भी लगे, जो लिखे फलाने ने यह समझाया था। बाबा देखते हैं कहाँ से भी ऐसी चिट्ठी नहीं आई है। तो समझा जाता है इतना बल समझाने में नहीं है जो उनको बाप की खैंच हो। प्रदर्शनी में हज़ारों आते हैं, कुछ तो निकलनी चाहिए ना। ज्ञान तलवार में वह जौहर नहीं है। बाप तो समझावेंगे ना योग का बल बहुत चाहिए। नहीं तो ज्ञान तलवार इतना असर नहीं करते हैं। जहाँ बाहर प्रदर्शनी आदि करते हैं, सेन्टर हैं नहीं, तो फिर कुछ भी निकलते नहीं। बाबा है भी गरीब निवाज़। तुम भी जो बिल्कुल साहुकार थे, अभी गरीब बने हो। माताओं में भी इतना बल नहीं है। भक्तिमार्ग के लिए तो बहुत ही पैसा निकालते हैं। ज्ञानमार्ग के लिए तो जब बुद्धि में आए हम जो करते हैं 21 जन्म लिए मिलेगा। निश्चय हो तो पत्र–व्यवहार भी करे। वह तो होता ही नहीं। पहले तो अपनी अवस्था देखनी है सच–2 हम याद करते हैं? बाप के साथ लव है? वह खुशी रहती है? तुम समझते हो जब तक बाप न था तो तुच्छ बुद्धि थे। अभी कितनी नॉलेज मिली है। यहाँ के पद्मपति से भी वहाँ के प्रजा बहुत सुखी रहती है। तुम रात से दिन में जाते हो। बाप समझाते हैं शांतिधाम–सुखधाम को याद करो। बाकी यह दुखधाम भूल जाओ। कर्मइन्द्रियों पर भी कंट्रोल करना है। मुख्य हैं आँखें। फिर क्रोध–लोभ भी कम नहीं। लोभ भी बेताला बनाए देती है। अच्छे–2 बच्चों को कब सर्विस बिगर मज़ा ही नहीं आवेगा। बाप का मददगार बनते हैं ना। जो सर्विस नहीं करते हैं वह ऐसे थोड़े ही कहेंगे शिवबाबा के मददगार हैं। मेल्स के लिए भी सर्विस बहुत है। मंदिरों में जाकर बैठें, श्मशान में जाकर बैठें। दुख में मनुष्य को वैराग्य आता है ना। मशानी वैरागी होते हैं। बाहर निकले। खलास। श्मशान से निकल धू मारकेट में जावेंगे। तुम बच्चों को इन सभी बातों से नफरत आती है। वैराग्य है। दो रोटी खाना भगवान के गुण गाना। अभी तो बाप को ही याद करना है। इसमें परहेज भी रखना पड़ता है। अपना खान–पान, रहना–करना सब है गुप्त। यह तो हरेक समझते हैं दैवीगुण धारण करनी है। देहाभिमान को भी तोड़ना है। यज्ञ के सभी काम ब्राह्मणों को ही करना है। बाहर के आदमी तो बड़े ही डर्टी होते हैं; परन्तु करे ही (क्या)। वह अजन हिम्मत नहीं आई है। अमृतसर में तालाब सभी साफ करते हैं। तो बड़े–2 आदमी आकर हाथ डालते हैं। रिगार्ड है ना। आपे ही मुकर्रर दिन पर आ जाते हैं। आगे तो बहुत ही अच्छी रीत मेहनत करते थे। साफ करते थे। यहाँ बच्चों में भी नम्बरवार हैं। बच्चे जानते हैं यह पढ़ाई पूरी कर फिर इनकी रिजल्ट दूसरे जन्म में जाए पावेंगे। तुम संगमयुग पर पढ़ते हो सतयुग के लिए। वह लोग तो सुख को कागविष्टा समान समझते हैं। अभी हैं तमोप्रधान बुद्धि। जो आता है वह करते रहते हैं। बैज जो हल्के बाबा ने बनाई है उस पर किसको समझाए फ्री दे दिया तो भी हर्जा नहीं है। यह जैसे कि दान करना है। यह बाबा है। ब्रह्मा द्वारा राजयोग सिखाते हैं। बस। बैज दे दिया। साहुकार कहेंगे, पैसा लो। बोलो, अच्छा जितना दो। गरीबों के लिए भी बनाना तो पड़ता है ना। शिवबाबा का भण्डारा तो सदैव ही भरपूर है। बच्चों का ही है, बच्चों की ही सर्विस में लगता है। सारा दिन यही खयालात चलती रहे। ढेर सर्विस है। बोलो एक बात बताने आए हैं जिससे तुम कभी भी दुखी, अशांत न होंगे। इसमें भी बच्चों को बहुत रिगार्ड मिल सकता है। तुम बच्चों का फर्ज है सुखदाई बनना। वह तो कुछ नहीं जानते है। म्युज़ियम में भी पहले–2 यह बात सिद्ध करना है गीता का भगवान कृष्ण नहीं है, वह तो बच्चा है। वह बाप है। बाप के बायोग्राफी में बच्चे का नाम डाल दिया है। पूरी–2 समझानी लिखी हुई है। फिर बहुतों से तुम सहियाँ ले सकते हो। वह इकट्ठे करो। पतित–पावनी गंगा वा... यह भी पीछे, पहले है वह और दूसरा फिर लिखो पतित–पावनी शिवबाबा है, न कि गीता। ऐसे लिखवाए प्र.... ढेर इकट्ठा करो। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को यादप्यार, गुडनाइट।